महाराष्ट्र शासन

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, यवतमाळ

एवं

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

के संयुक्त तत्वावधान में

विकसितभारत@2047 के ध्येय प्राप्ति में उच्च शिक्षा संस्थानो की भूमिका के उपलक्ष्य में

दो दिवसीय आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी

उच्च शिक्षा में दृष्टिकोण और वर्तमान मुद्दे

(APPROACHES AND CURRENT ISSUES IN HIGHER EDUCATION)

अंतर्राष्ट्रीय शांति, सद्भाव और ज्ञान के प्रकाश में

वसुधैव कुटुंबकम

की प्रासंगिकता

प्रेरणास्रोत

परम आदरणीय श्री चंद्रकान्त पाटील
मान. मंत्रीश्री, उच्च एवं तंत्र शिक्षा
महाराष्ट्र शासन

प्रेरणास्रोत

परम आदरणीय डॉ. अतुल कोठारी
राष्ट्रीय सचिव
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

आदरणीय श्री ईन्द्रनील नाईक
मान. मंत्रीश्री (राज्य), उच्च एवं तंत्र शिक्षा
महाराष्ट्र शासन

श्री बी. वेणुगोपाल रेड्डी
अ. मु. सचिव,उच्च एवं तंत्र शिक्षा
महाराष्ट्र शासन

डॉ. शैलेन्द्र देवलंकर
निर्देशक, उच्च शिक्षा
महाराष्ट्र शासन

सुश्री शोभा पैठणकर
राष्ट्रीय संयोजिका, महिला कार्य
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. शैलेश झाला
अध्यक्ष, पश्चिम क्षेत्रीय समिति
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

तिथिः

फाल्गुन शुक्ल पक्ष, चतुर्थी एवं पंचमी, विक्रम संवत 2082

दिनांकः 21-22 फरवरी 2026, शनिवार एवं रविवार

स्थानः

सभागृह, शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,

गोधानी रोड, उमरसरा, यवतमाळः 445 001, महाराष्ट्र (भारत)

शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, यवतमाळ

हमारे महाविद्यालय की ओर से, मैं आप सभी का इस खूबसूरत और विशाल ऐतिहासिक परिसर में हार्दिक स्वागत करता हूँ। यवतमाल को पहले 'येओटी' या 'येओत्माल' के नाम से जाना जाता था। यह बरार सल्तनत का हिस्सा था और इसे 'दुनिया का सबसे सुरक्षित स्थान' माना जाता था। किंवदंतियों के अनुसार, यह महाभारत काल से विदर्भ साम्राज्य का हिस्सा रहा है। ऐतिहासिक वृत्तांतों से अब यह ज्ञात होता है कि यवतमाल मौर्य साम्राज्य से लेकर चालुक्य वंश और यादव वंश तक विभिन्न शासकों और साम्राज्यों के अधीन रहा है।

इसके बाद यह अलाद्दीन हसन बहमन शाह के हाथों में आ गया, जिन्होंने 1347 में बहमनी सल्तनत की स्थापना की। बहमनी सल्तनत और उसके बाद इस्लामी शासन का दौर आया। 1572 में, अहमदनगर सल्तनत (वर्तमान अहमदनगर जिला) के शासक मुर्तजा शाह ने यवतमाल जिले को अपने राज्य में मिला लिया। 1596 में, अहमदनगर की योद्धा रानी चाँद बीबी ने यवतमाल जिले को मुगल साम्राज्य को सौंप दिया, जो उस समय भारत के एक बड़े हिस्से पर शासन कर रहे थे। 16वीं शताब्दी में यवतमाल मुगल साम्राज्य को सौंप दिया गया और 1707 में औरंगजेब की मृत्यु तक यह मुगलों के पास रहा। छठे मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद, यवतमाल मराठा साम्राज्य के अधीन आ गया। फिर मराठा साम्राज्य ने इस पर कब्जा कर लिया और 150 वर्षों तक यह उनके अधीन रहा।

सन् 1783 में जब राघोजी प्रथम भोंसले नागपुर राज्य के शासक बने, तो उन्होंने यवतमाल जिले को अपने राज्य में शामिल कर लिया। 19वीं शताब्दी के मध्य में जब ब्रिटिश साम्राज्य भारत के व्यापारिक नेटवर्क पर नियंत्रण स्थापित कर रहा था, तब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1853 में बरार प्रांत की स्थापना की। यवतमाल 1863 में पूर्वी बरार जिले का हिस्सा बना और बाद में दक्षिण-पूर्वी बरार जिले का हिस्सा बन गया—ये दोनों जिले मध्य प्रांत और बरार के अंतर्गत आते थे। यवतमाल 1956 में हुए राज्य पुनर्गठन तक मध्य प्रदेश का हिस्सा रहा, जिसके बाद इसे बॉम्बे राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया। 1 मई 1960 को महाराष्ट्र राज्य के गठन के साथ ही यवतमाल जिला भी उसी राज्य का हिस्सा बन गया।

मेरे युवा मित्रों, मुझे पूरा विश्वास है कि इस महाविद्यालय का वातावरण शिक्षण और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के आपके लंबे समय से प्रतीक्षित सपने को साकार करेगा। आपमें अपार क्षमता है, जिसका उपयोग न केवल आपको अकादमिक योग्यता प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, बल्कि आपके व्यक्तित्व को निखारने के लिए भी किया जा सकता है।

विद्यालय शिक्षण, अधिगम और नवोन्मेषी गतिविधियों एवं अनुसंधान के उच्च आदर्शों के प्रति प्रतिबद्ध है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि आप प्रतिभाशाली युवाओं की एक सशक्त पीढ़ी का निर्माण करें, जो तकनीकी रूप से बदलते गतिशील युग में राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षक शिक्षा की चुनौतियों का सामना कर सके। हम विद्यार्थी समुदाय को केंद्र में रखते हैं और उनमें आत्मविश्वास जगाने का प्रयास करते हैं ताकि वे समकालीन वैश्वीकृत दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हों।

हमारा दृष्टिकोण इस महाविद्यालय को शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में एक अद्वितीय "उत्कृष्टता केंद्र" के रूप में स्थापित करना है और इस क्षेत्र तथा राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करना है। मुझे विश्वास है कि इससे अंततः इक्कीसवीं सदी की मांगों को पूरा करने में सक्षम एक 'ज्ञान समाज' का निर्माण होगा।

मुझे आशा है कि महाराष्ट्र के इतिहास के महान व्यक्तित्व के नाम पर स्थापित सरकारी शिक्षा महाविद्यालय (सीटीई), यवतमाल के साथ आपका जुड़ाव आपको एक शानदार और सफल करियर की ओर ले जाएगा और ज्ञान को व्यवहार में बदलने के आपके लंबे समय से संजोए सपने को साकार करेगा।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

शिक्षा बचाओ आन्दोलन' को मूर्त संस्थानिक एवं सृजनात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए २ जुलाई, २००४ को शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का गठन किया गया. न्यास के ध्येय वाक्य हैं "**समस्या नहीं, समाधान की चर्चा करो**" एवं "**देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलना होगा**". न्यास का गंभीरता से मानना है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास है. इसी ध्येय के साथ न्यास ने अपने आधारभूत विषय के रूप में शिक्षा में चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास को बल देने का कार्य आरंभ किया.

तदुपरांत भारत की शिक्षा भारत की संस्कृति, प्रगति के अनुरूप हो- इस उद्देश्य के साथ कार्य विस्तार क्रमिक रूप से होते गया. शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक परम आदरणीय श्री दीनानाथ जी बत्रा हैं जो विद्या भारती के पूर्व निर्देशक रहे हैं. न्यास अपने सहयोगी संगठनों जैसे, शिक्षा बचाओ आन्दोलन समिति के साथ निकट सहयोग से काम करता है.

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास का घोषित लक्ष्य वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की वैकल्पिक व्यवस्था की स्थापना करना है. इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये यह संस्था शिक्षा के पाठ्यक्रम, प्रणाली, विधि और नीति को बदलने तथा शिक्षा के **'भारतीयकरण'** को आवश्यक मानती है. वर्तमान में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास कुल दस विषयों, तीन आयामों एवं तीन कार्य-विभागों के साथ निरंतर कार्यरत है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप शिक्षा की विधि के निर्माण हेतु 21 वीं सदी भारत में शिक्षक प्रशिक्षण में आधुनिक विचारधारा से सम्मिलित कार्यशील हैं। इसी अवधारणा को संजोये पूरे राष्ट्र में **एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम** की भारतीय मूल्यों के आधार पर और शिक्षक का बहिर्मुखी विकास के सभी आयामो को शिक्षक शिक्षा में प्रयोजन हेतु देशभर परिसंवाद और कार्यशाला में सहभागी हो रहा हैं।

प्रवर्तमान शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा को वैश्विक स्तर से उपर पहोंचाने के उद्देश्य से और भारत को विकसित भारत बनाने के संकल्प में न्यास की भूमिका शिक्षा के संरचनात्मक प्रारूप को और सुग्रथित करने की हैं। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास शिक्षा से जुडे हुए सभी शिक्षाविदों से विकसित भारत@२०४७ के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहयोग की कामना करता हैं।

भारत में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, शिक्षण प्रशिक्षण के क्षेत्र में २१ वीं शताब्दी की विचारधारा एवं भारतीय ज्ञान परंपरा के अनुरूप शिक्षा की विधि निर्माण के हेतु निरंतर कार्यशील हैं। इसी अवधारणा को संजोये हुए पूरे राष्ट्र में 'एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम' (चार वर्षीय) की भारतीय मूल्यों, संस्कृति एवं परंपरा के आधार पर साथ ही शिक्षको का चहुमुखी विकास के सभी आयामों को 'शिक्षक शिक्षा' में प्रयोजन हेतु कटिबद्ध हैं। देशभर में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, प्रान्तीय, जिला, शहर स्तर पर विभिन्न प्रकार की कार्यशाला, सम्मेलन एवं कार्यशाला आयोजित कर रहा हैं, परिणामस्वरूप हजारों शिक्षक लाभान्वित हो रहे हैं।

शोधपत्रों के लिए आमंत्रण:

शिक्षकों, शिक्षाविदों, अकादमिक प्रशासकों, शोधार्थियों, स्नातकोत्तर छात्रों और उच्च शिक्षा, स्कूली शिक्षा, विशेष शिक्षा या मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययनरत किसी भी विद्वान से विद्वतापूर्ण, मौलिक और अप्रकाशित या सम्मेलन या संगोष्ठी में प्रस्तुत न किए गए शोधपत्र आमंत्रित हैं।

1. **वसुधैव कुटुंबकम के दार्शनिक पहलू।**
   - क. वसुधैव कुटुंबकम की मूल अवधारणा।
   - ख. वर्तमान शिक्षण-अधिगम पद्धतियों में वसुधैव कुटुंबकम के विचारों का समावेश।

2. **वसुधैव कुटुंबकम के सामाजिक-सांस्कृतिक पहलू।**
   - क. अंतर-सांस्कृतिक मुद्दों के समाधान में वसुधैव कुटुंबकम की भूमिका।
   - ख. वसुधैव कुटुंबकम में परिकल्पित समाजों और समुदायों की भूमिका।

3. **वसुधैव कुटुंबकम के आर्थिक पहलू।**
   - क. सांप्रदायिक सद्भाव और वैश्विक शांति के लिए व्यापक विकास मॉडल।

4. **मानवता, शांति, विकास और उन्नति के लिए वसुधैव कुटुंबकम।**

5. **समृद्धि और अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए वसुधैव कुटुंबकम।**

Call for Research Papers:

Scholarly, original and unpublished or not presented research papers in Conference or Seminar from Teachers, Educators, Academic Administrators, Research Scholars, PG Students and any scholars pursuing study in area of Higher Education, School Education, Special education or Open or Distance Education.

1. **Philosophical Aspects of "Vasudhaiv Kutumbakam".**
   - a. Core concept of "Vasudhaiv Kutumbakam"
   - b. Integrating concerns of "Vasudhaiv Kutumbakam" in current teaching-learning practices.
2. **Socio-cultural Aspects of "Vasudhaiv Kutumbakam".**
   - a. Role of "Vasudhaiv Kutumbakam" in resolution of Cross-cultural issues.
   - b. Role of Societies and Communities as envisioned in "Vasudhaiv Kutumbakam"
3. **Economical Aspects of "Vasudhaiv Kutumbakam".**
   - a. Comprehensive growth and development model for communal harmony and Global Peace.
4. **"Vasudhaiv Kutumbakam" for Humanity, Peace, Growth and Development.**
5. **"Vasudhaiv Kutumbakam" for prosperity and international harmony.**

अंतिम दिनांक (Deadline)	२६ जनवरी २०२६ 26 January 2026
लेख इस इ-मेल आइडी पर ही भेजें (eMail ID to post Article)	icyms26@gmail.com

Accepted Research Papers will be published in

"EDUINSPIRE" - International eJournal

(eJournal is refereed and peer reviewed journal consist of ISSN- 2349-7076)

Council for Teacher Education, Gujarat Chapter (CTEG)

Biannual, (published in month of January and July).

All the published articles/papers in this journal are peer reviewed.

https://ctegujarat.org/eduinspire/index.html

CTE Gujarat will publish "EduInspire: An International e-Journal" as special Issue on the occasion of 2-Days Internation Conference.

Format for the Research Paper

Important Note: Kindly submit your research paper in word format only to

e-mail: icyms26@gmail.com,

(It will not be possible for organizing committee to publish papers if received not in format prescribed)

लेख एवं शोध-लेख का प्रारूप

लेख और शोध पत्र के सभी प्रतिभागी से अनुरोध है कि वे नीचे दिए गए निर्देशों का पालन करें अन्यथा इसे प्रकाशित संग्रह में शामिल करने में असमर्थ रहेंगे:

All the contributors of Article and Research Paper are requested to follow the instructions given below otherwise it may not be included in published Compendium:

भाषा (Language)	हिन्दी और मराठी	English
कम्प्युटर प्रोग्राम	एमएस वर्ड २०१३ और उनसे उपर	MS Word 2013 and above
पेज ले-आउट (Page Layout)	ए-४,	A-4
पंक्ति अंतराल (Line Spacing)	१	1
एलाइनमेन्ट (Alignment)	जस्टीफाइड	Justified
हाशिया (Margin)		Top- 1', Bottom-1' Left- 1.5', Right- 1'
लेख और शोध-लेख का शिर्षक (Title of the Paper)	सेन्ट्रली एलाइन्ड	Centrally Aligned
लेखक का विवरण (Details of Author)	जस्टीफाइड	Justified
फोन्ट्स (Fonts)	Unicode Nirmala UI	Times New Roman
शीर्षक के फॉन्ट आकार (Size of the Fonts-Title)	14	16
उपशीर्षक के फॉन्ट आकार (Size of the Fonts-Sub Title)	12	14
लखान के फॉन्ट आकार (Size of the Fonts-Text)	10	12
शब्द मर्यादा (Word Limit)	१२००-१५०० शब्द	1200-1500 Words
अंतिम दिनांक और लेख इस इ-मेल आइडी पर ही भेजें (Deadline and eMail ID to post Article)	२६ जनवरी २०२६ icyms26@gmail.com	26 January 2026

लेख एवं शोध-लेख संपादन एवं संपादक समिति

डॉ. कल्पेश एच. पाठक : क्षेत्र संयोजक (शिक्षक- शिक्षा), पश्चिम क्षेत्र, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. सुहासकुमार आर. पाटील : प्रधानाचार्य, शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, यवतमाळ

डॉ. जिग्नेश बी. पटेल- : प्राध्यापक, बाल अनुसंधान विश्वविद्यालय, गांधीनगर

स्नेहाधिन

डॉ. रमेश कोठारी
पूर्व कुलपति, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय एवं
अध्यक्ष, काउन्सील फॉर टीचर एज्युकेशन, गुजरात

डॉ. जी. एस. पराशर
भू. उपकुलपति, रा. तु. म. नागपुर विश्वविद्यालय
एवं भू. उपकुलपति, भारतीय समुद्री विश्वविद्यालय

डॉ. नवीन शेठ
अध्यक्ष (पश्चिम क्षेत्र)
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. दिव्यज्योति महंता
अध्यक्ष, पूर्वीय क्षेत्रीय समिति,
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

डॉ. राजीव पंड्या
राष्ट्रीय संयोजक (शिक्षक- शिक्षा)
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. कल्पेश पाठक
क्षेत्र संयोजक (शिक्षक- शिक्षा)
(पश्चिम क्षेत्र), शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. सुनीता जोशी
राष्ट्रीय सह-संयोजिका (शिक्षक- शिक्षा)
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

डॉ. राजश्री वैष्णव
प्रॉफे. एवं अध्यक्ष, शिक्षा संकाय,
नागपुर विश्वविद्यालय

डॉ. भरत रामानुज
सदस्य, पश्चिम क्षेत्रीय समिति,
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

डॉ. अश्विनि करवंदे
सदस्य, पश्चिम क्षेत्रीय समिति,
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

डॉ. करणम पुष्पनाधम
सदस्य, पश्चिम क्षेत्रीय समिति,
राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद

डॉ. जिग्नेश पटेल
प्रमुख संपादक, **EduInspire**,
सचिव, काउन्सील फॉर टीचर एज्युकेशन, गुजरात

उच्च शिक्षा में दृष्टिकोण और वर्तमान मुद्दे: संयोजन समिति

डॉ. सुहासकुमार रुपराव पाटील
संयोजक, आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी,
प्रधानाचार्य, शासकीय अध्यापक महाविद्यालय, यवतमाळ
अध्यक्ष, बॉर्ड ऑफ स्टडीझ, एस.जी.बी. अमरावती विश्वविद्यालय

डॉ. मनोज पाण्डेय
सह-संयोजक, आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी,
प्रांत संयोजक, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास- विदर्भ प्रांत
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रा. तु. म. नागपुर विश्वविद्यालय

डॉ. अमित ई. गर्वंड
सदस्य, आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी,
प्राचार्य, श्री शीवाजी शिक्षण महाविद्यालय

डॉ. निलिमा अंबाडकर
सदस्य, आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी,
प्राचार्य, एसएसएमएन शिक्षण महाविद्यालय

डॉ. गजानंद शर्मा
सदस्य, आंतराष्ट्रीय संगोष्ठी,
प्राचार्य, एमएससीसी शिक्षण महाविद्यालय

सदस्य, बॉर्ड ऑफ स्टडीझ, संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय